हमारी बात

मेरे अंदर है बहुत सी आवाज़ें –
चीत्कार, धिक्कार और चीखने की आवाज़ें
अंतर्मन का यह शोर
झुंझलाकर ठीलता रहता है भिले होंठ।

जूझता रहता है निरन्तर
बाहर की ख़ामोशियों से।
वो ख़ामोशियां जो ओढ़ा दी गई हैं
सदियों से मुझ पर
जो सिखाती हैं गुम हो जाना
खुद की पीड़ाओं के साथ।

देह की ऐंठन, तपन के साथ
जुटे रहना है घर के कामों में
खिदमत में उनकी जो
इज़ाफ़ा करते रहते हैं
हमारी ख़ामोशियों में।

कभी कभी मन करता है
उधेड़ दूं मुंह की सीवन
पिघलने दूं सदियों का गुबार कि
वो भी चख लें चीत्कार का दंश।
जान लें एक ख़ामोश देह में
दबे ज्वालामुखी के आवेग को!

सीमा श्रीवास्तव
नारीवादी कार्यकर्ता व लेखिका